10

न्याय

''फिर मैंने छोटे-बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के साम्हने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात, जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, कि उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को, जो उन में थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया'' (प्रकाशितवाक्य 20:12, 13)।

मृत्यु के समय प्राण और आत्मा, विश्राम और चैन के लिए स्वर्गलोक में (लूका 23:43; 2 कुरिन्थियों 12:4; प्रकाशितवाक्य 2:7) या टारटरस की पीड़ा[1] (2 पतरस 2:4) में से किसी एक स्थान, हेडिस में जाने के लिए देह से अलग हो जाएगी। देह को सम्भवतया कब्र में दफ़ना दिया जाएगा। फिर एक दिन यीशु मरे हुओं की देहों को जिलाने और मरे हुओं को जीवितों के साथ न्याय में अपने सामने खड़ा करने के लिए इकट्ठा करने वापस आएगा। यह कटनी के समय होगा, जो युग के अन्त में होगी (मत्ती 13:39)।

परमेश्वर ने मनुष्य के इतिहास में अलग-अलग लोगों, समूहों या देशों का न्याय कर उन्हें दण्ड दिया है।[2] यह इस बात की चेतावनी होनी चाहिए कि वह मनुष्य की हर बात का न्याय करेगा। इस जीवन में हर कार्य का प्रतिफल या दण्ड नहीं दिया जाता, परन्तु परमेश्वर अनन्तकाल में हर कार्य का न्याय कर हिसाब बराबर करेगा। न्याय के दिन को ''पिछला दिन'' (यूहन्ना 12:48), ''क्रोध का दिन'' (रोमियों 2:5), ''यीशु मसीह का दिन'' (फिलिप्पियों 1:6, 10), ''उस दिन'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:10), ''ठहराया हुआ दिन'' (प्रेरितों 17:31), ''न्याय का दिन'' (1 यूहन्ना 4:17), और ''भीषण दिन'' (यहूदा 6) कहा गया है।

इसे ''प्रभु का दिन'' नहीं कहा गया, क्योंकि प्रकाशितवाक्य 1:10 में ''प्रभु का[3] दिन'' रविवार को कहा गया है और इससे उलझन में नहीं पड़ना चाहिए, जैसा कि कुछ लोग न्याय के दिन के साथ इसे उलझा देते हैं:

> यद्यपि कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि [''प्रभु के दिन''; प्रकाशितवाक्य 1:10] केवल ''प्रभु के दिन'' का वैकल्पिक पदनाम है, जिसका इस्तेमाल पुराने और नये दोनों नियमों में न्याय के दिन के लिए बार-बार हुआ है ... अधिकतर विद्वान यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह रविवार को ही कहा गया है ...। यह निष्कर्ष बाइबल

से बाहर के आरम्भिक मसीही लेखों में ''प्रभु के दिन'' के बार-बार किए जाने वाले इस्तेमाल से निकाले गए निष्कर्ष के कारण है (उदाहरण के लिए, *डिडेक* 14:1; इगनेशियस, *मैगनेशियन्स* 19:1; क्लेमंट ऑफ़ अल्गज़ैंडरिया, *स्ट्रोमेटा* 7:12; टरटुलियन, *ऑन आइडोलेट्री,* अध्याय 14) रविवार के सम्बन्ध में।[4]

इसका समय

न्याय मसीह के दोबारा आने पर होगा (मत्ती 25:31-33; प्रकाशितवाक्य 20:11, 12)। यीशु ने कहा कि केवल पिता ही जानता है कि यह कब होगा (मत्ती 24:36), जिसका अर्थ यह हुआ कि संसार में किसी को पता नहीं है कि न्याय के दिन की तिथि कब आएगी।

इसकी निश्चितता

परमेश्वर कब न्याय करेगा, यह बात इतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी यह कि वह न्याय करेगा। बाइबल चेतावनी देती है, ''परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा'' (सभोपदेशक 12:14)।

उस दिन जो परमेश्वर ने ठहराया है, वह जगत का न्याय करेगा, जिसका आश्वासन उसने सब लोगों को, यीशु को मुर्दों में से जिलाकर दे दिया है (प्रेरितों 17:31)। न्याय के लिए सब को बुलाया जाएगा। पौलुस ने घोषणा की थी, ''क्योंकि आवश्यक है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10)।

इस के साथ होने वाली घटनाएं

न्याय के उस यादगारी दिन, सब लोगों का न्याय किया जाएगा:

(1) यीशु स्वर्गदूतों के साथ (मत्ती 25:31) धधकती हुई आग में (2 थिस्सलुनीकियों 1:7) पूरी महिमा के साथ स्वर्ग से उतरेगा, और अपने तेजोमय सिंहासन पर, जो न्याय की उसकी गद्दी है, बैठेगा (मत्ती 25:31, 32; देखें 2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:11)।

(2) मृत्यु तथा अधोलोक अपने मुर्दों को जो उनमें हैं, दे देंगे (प्रकाशितवाक्य 20:13)।

(3) हम सब जो जिलाए गए हैं और जो पृथ्वी पर जीवित हैं, स्वर्गदूतों द्वारा (मत्ती 13:39) यीशु के सामने पेश करने के लिए (2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:12) न्याय के लिए (प्रेरितों 10:42; 2 तीमुथियुस 4:1) एकत्र किए जाएंगे।

(4) आकाश और पृथ्वी नष्ट किए जाएंगे (प्रकाशितवाक्य 20:11; 2 पतरस 3:7-12)।

(5) पुस्तकें खोली जाएंगी (प्रकाशितवाक्य 20:12)।

(6) हमारा न्याय पुस्तकों में लिखी बातों से, हमारे कामों के अनुसार होगा (यूहन्ना 12:48; प्रकाशितवाक्य 20:13)।

(7) धर्मी लोगों का न्याय पहले किया जाएगा (मत्ती 25:34-40; 1 पतरस 4:17)।

(8) उसके बाद दुष्टों का न्याय होगा (मत्ती 25:41-46)।

(9) यीशु अपने न्याय के सही होने को दिखाने के लिए हमारे सब कामों की समीक्षा करेगा (मत्ती 25:34-46)।

(10) हम में से हर एक को अनन्तकाल तक रहने का निर्णय सुनाया जाएगा (मत्ती 25:34-46)।

इसका परिदृश्य

बाइबल दृढ़ता से बताती है कि परमेश्वर न्याय करेगा (भजन संहिता 96:10; देखें सभोपदेशक 12:14; रोमियों 2:3; 14:12; 1 कुरिन्थियों 5:13; इब्रानियों 12:23) और न्यायी केवल एक ही होगा (याकूब 4:12)। क्योंकि पदनाम ''परमेश्वर'' पुत्र और पिता दोनों पर लागू हो सकता है (यूहन्ना 1:1, 2), इसलिए प्रश्न यह नहीं है कि ''क्या न्याय परमेश्वर करेगा?'' प्रश्न यह है कि ''न्याय पिता करेगा या पुत्र?''

बेशक न्याय में पिता को शामिल किया गया है, न्याय वह पुत्र अर्थात यीशु के द्वारा ही करेगा (प्रेरितों 17:31; रोमियों 2:16); इसलिए यह कहा जा सकता है कि ''पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है'' (यूहन्ना 5:22)। नये नियम की अन्य आयतें इस सच्चाई से मेल खाती हैं। परमेश्वर और मसीह की न्याय की गद्दी एक ही होनी चाहिए (रोमियों 14:10; 2 कुरिन्थियों 5:10)।

न्याय के दृश्य में पिता न्याय की गद्दी पर और यीशु हमारा पक्ष रखने वाले वकील की तरह नहीं होगा जैसा कि कुछ लोगों ने दिखाया है। इस समय यीशु इस ढंग से कार्य कर रहा है (1 यूहन्ना 2:1)। न्याय के दिन यीशु न्यायाधीश बनकर अपने सिंहासन अर्थात न्याय की अपनी गद्दी पर बैठकर (मत्ती 25:31, 32; 2 कुरिन्थियों 5:10) न्याय करेगा।

संसार का न्याय करने में अन्य लोगों के भाग लेने के बारे में कुछ प्रश्न उठते हैं। पहले तो यीशु ने कहा कि प्रेरित इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करेंगे (मत्ती 19:28)। वे कब न्याय करेंगे? क्या वे इस वर्तमान युग में, इस्राएल के इतिहास के न्यायियों की तरह आत्मिक अर्थ में न्याय कर रहे हैं (न्यायियों 2:16) या वे समय के अन्त में न्याय करेंगे?

दूसरा, पवित्र लोग संसार और स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे (1 कुरिन्थियों 6:2, 3)। क्या वे परमेश्वर की आज्ञा पालन से न्याय कर रहे हैं, जैसे नूह ने अपने संसार को दोषी ठहराया था या वे न्यायाधीश के रूप में यीशु के साथ न्याय की गद्दी पर बैठकर दण्ड देंगे?

तीसरा, शहीद हुए पवित्र लोगों के प्राणों को सिंहासनों पर दिखाया गया है। प्रकाशितवाक्य 20:4 में कहा गया है, ''और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया।'' क्या यह ऐसा ही होगा? क्या यह न्याय अन्त समय में होगा? क्या उनका न्याय ''हज़ार वर्ष'' तक होता रहेगा? क्या उनके संदेश में न्याय मिलता है या वे अन्त के दिन न्याय करने के लिए मसीह के साथ बैठेंगे?

याकूब कहता है कि न्याय करने वाला केवल एक ही है (याकूब 4:12), जो यीशु के अलावा अन्य किसी को भी निकाल देता है। इस कारण, ऊपर दी गई आयतों का अर्थ यह लिया जाना चाहिए कि अन्य लोग अपने जीवन की तुलनाओं के द्वारा न्याय करेंगे। इसकी

अच्छी व्याख्या यीशु की बात हो सकती है जिसमें उसने कहा कि ''नीनवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर मन फिराया। और देखो, यहां वह है जो योना से भी बड़ा है'' (मत्ती 12:41)।

इसका मानक

यीशु हमारे जीवनों को किस मानक से मापेगा ? प्रकाशितवाक्य 20:12 कहता है, ''फिर मैंने छोटे-बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के साम्हने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात, जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया।'' ये पुस्तकें बाइबल की पुस्तकें हो सकती हैं। पौलुस यह कह रहा हो सकता है कि रोमियों 2:16 में हमारे न्याय का आधार सुसमाचार होगा; परन्तु इस आयत का बेहतर अनुवाद शायद यह है कि ''... मेरे सुसमाचार के अनुसार, परमेश्वर मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा।''

यीशु की एक बात से मानक की बात सुलझ जाती है, जिससे मसीही युग में सब का न्याय होगा। उसने कहा, ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा ... ।'' (यूहन्ना 12:48-50)

मसीही युग से पहले के लोगों का न्याय किसी और मानक से होगा। पौलुस ने लिखा है, ''इसलिए कि जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे, और जिन्होंने व्यवस्था पाकर पाप किया, उनका दण्ड व्यवस्था के अनुसार होगा। क्योंकि परमेश्वर के यहां व्यवस्था के सुनने वाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलने वाले धर्मी ठहराए जाएंगे'' (रोमियों 2:12, 13)। किसी का न्याय परमेश्वर की विशेष युग में दी गई उन शर्तों के आधार पर होगा।

इस युग में न्याय करने का मापक यीशु का वचन है, जिसके द्वारा हमने अपनी देहों में रहते हुए काम किया (2 कुरिन्थियों 5:10)। इसमें हमारे द्वारा किए गए गुप्त काम होंगे (रोमियों 2:16), हमने दूसरों का न्याय कैसे किया (मत्ती 7:1, 2; याकूब 2:13), हमारी बातें (मत्ती 12:36, 37), हमारे काम (मत्ती 16:27; रोमियों 2:6; 1 पतरस 1:17) और हमारे मनों के उद्देश्य होंगे (1 कुरिन्थियों 4:5)।

अच्छी बात यह है कि यीशु के लहू के द्वारा धोए जाने के कारण (रोमियों 3:25; प्रेरितों 2:38), हमारे पाप उसके लहू से धोए जा सकते हैं (प्रेरितों 22:16; प्रकाशितवाक्य 1:5)। हम पर किसी पाप का दोष न लगाए जाने के कारण हम उसके सामने ''पवित्र और निष्कलंक और निर्दोष'' (कुलुस्सियों 1:22) खड़े हो सकते हैं। हमारी गलतियां यीशु द्वारा सुधार दी गई हैं। यदि ऐसा है, तो परमेश्वर हमारे पापों को फिर याद नहीं करेगा (इब्रानियों 8:12) और इस कारण न्याय के दिन उन्हें हमारे विरुद्ध इस्तेमाल नहीं करेगा।

उस दिन परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं लेगा। वह बिना पक्षपात के न्याय करेगा (रोमियों 2:11; 1 पतरस 1:17)। यदि हमने उसका सम्मान किया है और उसकी इच्छा के

अनुसार जीवन बिताया है (मत्ती 7:21), तो वह हमें स्वीकार कर लेगा; परन्तु यदि हम ने उसकी बात नहीं मानी है तो वह हमें ठुकरा देगा।

क्योंकि न्याय का आधार धार्मिकता और पवित्रता होगा (प्रेरितों 17:31), परमेश्वर की अपनी पवित्रता उसका मानक होगी (1 पतरस 1:15, 16)। इसी लिए हमें यीशु जैसे बनने के लिए बढ़ते रहना (इफिसियों 4:13) और उसे अपने जीवनों के आदर्श के रूप में इस्तेमाल करना आवश्यक है (1 यूहन्ना 2:6)। यदि हम यहां उसके जैसे हैं, तो न्याय के दिन हम आश्वस्त हो सकते हैं (1 यूहन्ना 4:17)।

हमें जानने के आधार पर (इब्रानियों 4:13), परमेश्वर हमारे हर काम का, गुप्त या खुले काम का न्याय (सभोपदेशक 12:14) कठोरता और निष्पक्षता से करेगा। वह उन लोगों पर करुणा दिखाएगा, जिन्होंने दूसरों पर करुणा दिखाई है; परन्तु, ''जिसने दया नहीं की, उसका न्याय बिना दया के होगा'' (मत्ती 5:7; याकूब 2:13)।

बड़े अवसर तथा बड़े पद पाने वालों का बड़ी कठोरता से न्याय किया जाएगा। तोड़ों के दृष्टांत से इस बात का पता चलता है कि परमेश्वर हम से उम्मीद करता है कि हम उसी के अनुसार सेवा करें, जो हमें दिया गया है और हमारा न्याय उसी के अनुसार ही होगा (मत्ती 25:14-30)। इस दृष्टांत में स्थापित सिद्धांत को इस प्रकार कहा जा सकता है: ''जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत मांगा जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया है, उस से बहुत मांगेंगे'' (लूका 12:48)। जो लोग परमेश्वर के वचन के सिखाने वाले हैं उनकी ज़िम्मेदारी भी अधिक है। यही कारण है कि परमेश्वर चेतावनी देता है, ''तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो, कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे'' (याकूब 3:1)। परमेश्वर का न्याय किसी दिए गए अवसर तथा योग्यता के आधार पर होगा।

न्याय अन्तिम होगा (मत्ती 25:31-46); इसलिए परमेश्वर के साथ किया गया कोई भी तर्क खतरनाक होगा। आज्ञा न मानने वाले और अपने जीवनों को सही ठहराने की कोशिश करने वालों से यीशु कहेगा, ''हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ'' (मत्ती 7:21-23)।

व्यक्ति के जीवन की समीक्षा करने से पहले परमेश्वर जानता है कि उसका न्याय कैसे किया जाएगा। जैसे पुराने समय में परमेश्वर जानता था (मत्ती 25:34) कि उसके लोग कौन हैं (2 तीमुथियुस 2:19; यूहन्ना 10:14, 27) वैसे ही अब भी जानता है। बहुत पहले उसने दुष्टों का न्याय करने की योजना बनाई थी (2 पतरस 2:3)। न्याय का दिन वह समय नहीं होगा, यीशु अपना सिर खुजलाते हुए अपना मन बनाएगा कि कौन स्वर्ग में जाए और कौन नरक में। वह पहले से ही जानता है कि कौन कहां जाएगा। न्याय के दिन वह हमारे साथ हमारे जीवनों की समीक्षा करेगा, हमें खोलकर बताएगा ताकि हमारे किए जाने वाले न्याय को हम समझ सकें और फिर वह निर्णय सुनाएगा।

इसका दायरा

बाइबल दृढ़ता से इस बात की घोषणा करती है कि ''सब'' लोगों का न्याय होगा (यहूदा

15)। यह तब तक नहीं हो सकता जब तक सभी मरे हुए जी नहीं उठते। यीशु का जी उठना परमेश्वर की ओर से प्रमाण है कि उसने सब लोगों का न्याय करने की योजना बनाई है (प्रेरितों 17:31)। धर्मी हों या दुष्ट, सब को न्याय के लिए (2 कुरिन्थियों 5:10; 1 पतरस 4:4, 5; 2 पतरस 2:9) जिलाया जाएगा (यूहन्ना 5:28, 29; प्रेरितों 24:15)। इसमें सभी जातियों के भले और बुरे लोग (मत्ती 25:31-46), सभी मृतकों में से धर्मी और दुष्ट (प्रकाशिवाक्य 20:11-15) और शायद स्वर्गदूत भी होंगे (1 कुरिन्थियों 6:3; 2 पतरस 2:4)। शैतान और उसके दूतों की शायद न्याय के दिन सुनवाई नहीं होगी। उनके दोषी ठहरने का कारण इतना स्पष्ट होना चाहिए कि परमेश्वर को उन्हें दण्ड देने में अपनी धार्मिकता दिखाने के लिए उनके बही-खाते खोलने की आवश्यकता नहीं है (मत्ती 25:41; प्रकाशितवाक्य 20:10)।

सारांश

परमेश्वर का न्याय ही उसे ''धर्म से जगत का न्याय'' (प्रेरितों 17:31) करने और अपने न्याय में धर्मी ठहरने (यूहन्ना 5:30) के लिए बाध्य करेगा। न्याय एक गंभीर मामला है: ''प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (इब्रानियों 10:30, 31)। जान-बूझकर परमेश्वर की आज्ञा टालने वालों के लिए ''दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है, जो विरोधियों को भस्म कर देगा'' (इब्रानियों 10:26, 27)।

परमेश्वर के प्रेम से उद्धार उपलब्ध करा दिया गया है, यदि हम उसकी आज्ञा मानते हैं (यूहन्ना 3:16)। मसीही बनने की उसकी आज्ञाएं इस प्रकार हैं: अपने पापों से मन फिराएं (प्रेरितों 17:30, 31), यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर उसका अंगीकार करें (रोमियों 10:10) और बपतिस्मा लें (प्रेरितों 2:38; 22:16)। फिर उसकी संतान के रूप में बढ़ना और परिपक्व होना आवश्यक है (1 पतरस 2:2)। हमें अपने आप को तैयार करना और दूसरों को परमेश्वर की इच्छा सिखाकर उस दिन के लिए तैयार होने में सहायता करना आवश्यक है।

टिप्पणियां

[1]यूनानी शब्द *tartaros,* जिससे हमें ''टारटरस'' शब्द मिला है जो बाइबल में 2 पतरस 2:4 में केवल एक बार मिलता है। यद्यपि कई संस्करणों में इसका अनुवाद ''नरक'' के रूप में किया गया है परन्तु इसे अधोलोक अर्थात मृतकों के स्थान या गेहन्ना अर्थात अनन्त आग के स्थान से नहीं उलझाना चाहिए। इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''मृतकों की मध्य स्थिति'' में देखें। [2]परमेश्वर ने आदम और हव्वा (उत्पत्ति 3:19-23), कैन (उत्पत्ति 4:9-12), नूह के समय के संसार (उत्पत्ति 6:5-7), सदोम और अमोरा (उत्पत्ति 19:27-29), मिस्र (निर्गमन 12:12), नदाब और अबीहू (लैव्यव्यवस्था 10:1-3), मिरियम और हारून (गिनती 12:1-15), कोरह (गिनती 16:1-49), मूसा (गिनती 20:10-12), ऊज़ाह (2 शमूएल 6:6-8), दाऊद (2 शमूएल 12:1-14), इस्राएल के राज्यों (2 शमूएल 17:7-18) और यहूदा (2 इतिहास 36:15-21) और कई अन्यों का न्याय किया। [3]''प्रभु का'' यूनानी विशेषण *kuriakos* है जिसका इस्तेमाल 1 कुरिन्थियों 11:20 में भी हुआ है। [4]एच. वाटरमैन, ''द लॉर्ड'स डे,'' *द ज़ौंडरवन पिक्टोरियल इंसाइक्लोपीडिया*

ऑफ़ द बाइबल, अंक 3, सं. मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: ज़ौंडरवन, 1975), 965. डब्ल्यू. ई. वाईन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम वाइट, जूनियर, ''डे,'' *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1985), 146.